B.R. Ambedkar Bihar University, Muzaffarpur
Directorate of Distance Education
T.D.C. 1st Semester Examination 2016 January Session 2016-19
Sub:- Sanskrit (Hons.)
Model Paper (Paper 1) Full Marks 80

खण्ड (क)

1. पुराणों के लक्षण निरूपित करते हुए पुराणों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
2. पुराणों का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए इतिहास एवं पुराण में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
3. रामायण का रचनाकाल निर्धारित कीजिए।
4. रामायण का वर्ण्य विषय का संक्षेप में उल्लेख करें।
5. रामायण का महत्त्व निरूपित करें।
6. महाभारत का सामान्य परिचय दीजिए।
7. रामायण और महाभारत में पौर्वापर्य का विवेचन कीजिए।
8. महाकाव्य की उत्पत्ति एवम् विकास पर प्रकाश डालिए।
9. प्रमुख महाकाव्यों एवं उनके रचनाकारों का परिचय दीजिए।
10. गद्य साहित्य के उद्भव एवम् विकास पर प्रकाश डालिए।
11. संस्कृत रूपकों की उत्पत्ति एवम् विकास की समीक्षा कीजिए।
12. कालिदास के ग्रंथों की समीक्षा करते हुए उनकी रचना-शैली की समीक्षा कीजिए।
13. गीतिकाव्य के उद्भव एवं विकास का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करें
14. कथा और आख्यायिका में अन्तर स्पष्ट करें।
15. पंचतंत्र और हितोपदेश का परिचय प्रस्तुत कीजिए।
16. श्रीमद्भगवद्गीता का परिचय एवं माहात्म्य निरूपित करें
17. भवभूति की रचना शैली की समीक्षा कीजिए
18. भवभूति विरचित नाटकों की कथावस्तु का सारांश प्रस्तुत कीजिए।
19. 'भारवेरर्थगौरवम्' - इस उक्ति की समीक्षा कीजिए।
20. अष्टाध्यायी, कात्यायन वार्त्तिक और महाभाष्य का परिचय दीजिए।
21. कादम्बरी, दशकुमारचरित, नैषधीयचरित, शिशुपालवध किरातार्जुनीयम् और हर्षचरित - इन ग्रंथों का सामान्य परिचय प्रस्तुत कीजिए।

(क्रमशः)

संस्कृत (प्रतिष्ठा) - प्रथम पत्र
(प्रथम सेमेस्टर)

खण्ड (ख)
(व्याकरण)

1. निम्नलिखित सूत्रों की व्याख्या कीजिए →

(क) हलन्त्यम्, अदर्शनं लोपः, उच्चैरुदात्तः, तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्, परः सन्निकर्षः संहिता, हलोऽनन्तरा संयोगः, सुप्तिङन्तं पदम्।

(ख) इकोयणचि, स्थानेऽन्तरतमः, झलां जश् झशि, एचोऽयवायावः, यथासंख्यमनुदेशः समानाम्, अदेङ् गुणः, आद्गुणः, उरण् रपरः, वृद्धिरेचि, अकः सवर्णे दीर्घः, ससजुषो रुः।

(ग) अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्, कृत्तद्धितसमासाश्च, विरामोऽवसानम्, बहुषु बहुवचनम्, न विभक्तौ तुस्माः, लश्क्वतद्धिते, यचि भम्, आतो धातोः, जसि च, शेषो घ्यसखि, आङो नाऽस्त्रियाम्, यू स्त्र्याख्यौ नदी।

2. अधोलिखित प्रयोगों की साधनिका लिखिए →

सुद्युपास्यः, मद्वरि, लाकृतिः, गव्यम्, गङ्गोदकम्, तवल्कारः, उपेन्द्रः, गङ्गौघः, दैत्यारिः, रामश्शेते, वागीशः, ब्रह्मर्षिः, चिन्मयम्, हरिश्शेते, रामः, हरिणा, हरये, रमया, रमाः, सर्वस्यै, स्त्रियः।

3. अधोलिखित की सोदाहरण व्याख्या कीजिए —

कर्तुरीप्सिततमं कर्म, कर्मणि द्वितीया, अकथितं च, अधि-शीङ्-स्थाऽऽसां कर्म, उपान्वध्याङ्वसः, कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे, साधकतमं करणम्, कर्तृकरणयोस्तृतीया, येनाङ्गविकारः, इत्थंभूतलक्षणे, हेतौ, रुच्यर्थानां प्रीयमाणः, स्पृहेरीप्सितः, धारेरुत्तमर्णः, ध्रुवमपायेऽपादानम्, भीत्रार्थानां भयहेतुः, भुवः प्रभवः, षष्ठीशेषे, सप्तम्यधिकरणे च।

— x —